साकेत

राम तुम्हारा वृत्त स्वयं ही काव्य है,
कोई कवि बन जाय, सहज सम्भाव्य है।

श्रीमैथिलीशरण गुप्त

साहित्य मुद्रण, चिरगाँव (झाँसी) में
श्रीसुमित्रानन्दन गुप्त द्वारा मुद्रित ।

२०२१ वि०

प्रकाशक
साहित्य-सदन,
चिरगाँव (झाँसी)